कविता / ब्रजमोहन

मंदिर भी ले लो, मस्जिद भी ले लो
मगर आदमी के लहू से न खेलो

मंदिर से गर जो खुदा है नदारद
मस्जिद में गर ईश्वर नहीं है
तो फिर आदमी के लिए धर्म क्या है
जहां कत्ल करने के लिए उठते हैं खंजर
खुदा को भी ले लो, ईश्वर को भी ले लो
मगर आदमी के लहू से न खेलो

ये किसके इशारे पे किसकी शरारत
ये किस नींव पर उठ रही है इमारत
ये दो भाइयों को लड़ाते-लड़ाते
कहां ले के आयी है देखो सियासत
वोटें भी ले लो, कुर्सी भी ले लो
मगर आदमी के लहू से न खेलो

जहां चाहिए सर पे छत आदमी को
वहां उठ रहा है-धुआं आसमां से
जहां भूख को रोटियों की जरूरत
वहां बंट रही है जातियां किस दुकां से
तुम राम ले लो, बाबर ले लो
मगर आदमी के लहू से न खेलो

हमें चाहिए न अंधेरा तुम्हारा
हमें चाहिए न सियासत तुम्हारी
हमें चाहिए जिंदगी का उजाला
हमें चाहिए सिर्फ दुनिया हमारी
मंदिर भी ले लो, मस्जिद भी ले लो
मगर आदमी के लहू से न खेलो

विशेष / आज भी काले अंग्रेज

भारत में सेवा करने वाले ब्रिटिश अधिकारियों को इंग्लैंड लौटने पर सार्वजनिक पद/जिम्मेदारी नहीं दी जाती थी। तर्क यह था कि उन्होंने एक गुलाम राष्ट्र पर शासन किया है जिसकी वजह से उनके दृष्टिकोण और व्यवहार में फर्क आ गया होगा। अगर उनको यहां ऐसी जिम्मेदारी दी जाए, तो वह आजाद ब्रिटिश नागरिकों के साथ भी उसी तरह से ही व्यवहार करेंगे। इस बात को समझने के लिए नीचे दिया गया वाकया जरूर पढ़ें...

एक ब्रिटिश महिला जिसका पति ब्रिटिश शासन के दौरान पाकिस्तान और भारत में एक सिविल सेवा अधिकारी था। महिला ने अपने जीवन के कई साल भारत के विभिन्न हिस्सों में बिताए, अपनी वापसी पर उन्होंने अपने संस्मरणों पर आधारित एक सुंदर पुस्तक लिखी।

महिला ने लिखा कि जब मेरे पति एक जिले के डिप्टी कमिश्नर थे तो मेरा बेटा करीब चार साल का था और मेरी बेटी एक साल की थी। डिप्टी कलेक्टर को मिलने वाली कई एकड़ में बनी एक हवेली में रहते थे। सैकड़ों लोग डीसी के घर और परिवार की सेवा में लगे रहते थे। हर दिन पार्टियां होती थीं, जिले के बड़े जमींदार हमें अपने शिकार कार्यक्रमों में आमंत्रित करने में गर्व महसूस करते थे और हम जिसके पास जाते थे, वह इसे सम्मान मानता था। हमारी शान और शौकत ऐसी थी कि ब्रिटेन में महारानी और शाही परिवार भी मुश्किल से मिलती होगी।

ट्रेन यात्रा के दौरान डिप्टी कमिश्नर के परिवार के लिए नवाबी ठाट से लैस एक आलीशान कंपार्टमेंट आरक्षित किया जाता था। जब हम ट्रेन में चढ़ते तो सफेद कपड़े वाला ड्राइवर दोनों हाथ बांधकर हमारे सामने खड़ा हो जाता और यात्रा शुरू करने की अनुमति मांगता। अनुमति मिलने के बाद ही ट्रेन चलने लगती। एक बार जब हम यात्रा के लिए ट्रेन में सवार हुए, तो परंपरा के अनुसार, ड्राइवर आया और अनुमति मांगी। इससे पहले कि मैं कुछ बोल पाती, मेरे बेटे का किसी कारण से मूड खराब था। उसने ड्राइवर को गाड़ी न चलाने को कहा। ड्राइवर ने हुक्म बजा लाते हुए कहा, जो हुक्म छोटे सरकार। कुछ देर बाद स्टेशन मास्टर समेत पूरा स्टाफ इकट्ठा हो गया और मेरे चार साल के बेटे से भीख मांगने लगा, लेकिन उसने ट्रेन को चलाने से मना कर दिया। आखिरकार, बड़ी मुश्किल से, मैंने अपने बेटे को कई चॉकलेट के वादे पर ट्रेन चलाने के लिए राजी किया और यात्रा शुरू हुई।

कुछ महीने बाद, वह महिला अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से मिलने यूके लौट आई। वह जहाज से लंदन पहुंचे, उनकी रिहाइश वेल्स में एक काउंटी में थी जिसके लिए उन्हें ट्रेन से यात्रा करनी थी। वह महिला स्टेशन पर एक बेंच पर अपनी बेटी और बेटे को बैठाकर टिकट लेने चली गई। लंबी कतार के कारण बहुत देर हो चुकी थी, जिससे उस महिला का बेटा बहुत परेशान हो गया था। जब वह ट्रेन में चढ़े तो आलीशान कंपाउंड की जगह फर्स्ट क्लास की सीटें देखकर उस बच्चे को फिर गुस्सा आ गया।

ट्रेन ने समय पर यात्रा शुरू की तो वह बच्चा लगातार चीखने-चिल्लाने लगा। वह ज़ोर से कह रहा था, "यह कैसा उल्लू का पट्ठा ड्राइवर है। उसने हमारी अनुमति के बिना ट्रेन चलाना शुरू कर दी है। मैं पापा को बोल कर इसे जूते लगवा लूंगा।" महिला को बच्चे को यह समझाना मुश्किल हो रहा था कि यह उसके पिता का जिला नहीं है, यह एक स्वतंत्र देश है। यहां डिप्टी कमिश्नर जैसा तीसरे दर्जे का सरकारी अफसर तो क्या प्रधानमंत्री और राजा को भी यह अख्तियार नहीं है कि वह लोगों को अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए अपमानित कर सके। आज भले ही हमने अंग्रेजों को खदेड़ दिया है लेकिन हमने गुलामी को अभी तक देश बदर नहीं किया। आज भी कई अधिकारी, एसपी, मंत्री, सलाहकार और राजनेता अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए आम लोगों को घंटों सड़कों पर परेशान करते हैं। प्रोटोकॉल आम जनता की सुविधा के लिए होना चाहिए, ना कि उनके लिए परेशानी का कारण।

फिलिस्तीनी नागरिक का खत यूरोप के नाम

अल जज़ीरा

प्रिय यूरोपवासियों,

मैं, लाखों फिलिस्तीनियों की तरह, हमारे लोगों पर हुई सामूहिक मृत्यु और विनाश के एक और दौर के सबसे बुरे दौर से गुजर रहा हूं - जिसे आप हमेशा की तरह "फिलिस्तीनी-इजरायल संघर्ष का बढ़ना" ही कहेंगे।

जब मैं ये पंक्तियां लिख रहा हूं, अल-अहली अस्पताल पर बमबारी की गई, जिसमें सैकड़ों बच्चे, पुरुष और महिलाएं मारे गए। कुछ घंटे पहले, मेरे दोस्त मोहम्मद मोखीमर, उनकी पत्नी सफा और उनकी तीन महीने की बच्ची एलियाना की मौत की खबर मुझ तक पहुंची। इज़रायली आदेशों का पालन करते हुए, अन्य परिवारों के साथ वे गाजा के दक्षिणी भाग में चले गए, लेकिन वे और 70 अन्य फ़िलिस्तीनी इज़रायली हवाई हमलों में मारे गए।

एकमात्र शब्द जिसके बारे में मैं सोच सकता हूं वह अरबी में "क़हर" है जो मुझे अभी महसूस होता है। यह सिर्फ दर्द, पीड़ा और गुस्सा नहीं है। यह पीढ़ियों से चली आ रही वह भावना है, जो जातीय सफाए, सामूहिक हत्याओं, अन्याय, उत्पीड़न, उपनिवेशीकरण, कब्ज़ा और रंगभेद के 75 से अधिक वर्षों से जारी है। यह हर फ़िलिस्तीनी के मन में समाई हुई भावना है, जिसे हमें जीवन भर जीना है।

यह एक ऐसा एहसास है जिसके साथ मैं गाजा पट्टी में शरणार्थियों के एक परिवार में पैदा हुआ था। मेरे दादा-दादी इसदुद (अब अशदोद) गांव और बेयट जिरजा गांव से थे, लेकिन उन्हें अपने घरों से लगभग 20 किमी (12.4 मील) दूर, जबालिया शरणार्थी शिविर में बसने के लिए मजबूर होना पड़ा। क़हर शायद पहली भावना थी जो मैंने एक बच्चे के रूप में अपनी माँ के चेहरे पर पढ़ी थी - एक युवा माँ पहले इंतिफ़ादा के दौरान गाजा पर इजरायली हमले के दौरान अपने बच्चों के जीवित रहने के बारे में फिकरमंद थी।

यहूदियों ने सबसे पहले हमारे घर पर छापा मारा, और जब उन्होंने पहली बार मेरे पिता को गिरफ्तार किया, जिन्हें बिना किसी मुकदमे या आरोप के बार-बार मनमाने ढंग से हिरासत में रखा गया था। जब मैंने इजरायली सैनिकों को शांतिपूर्ण फिलिस्तीनी प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाते देखा तो क़हर ने मुझे अभिभूत कर दिया। क़हर उस दर्द से कहीं अधिक शक्तिशाली था जो मुझे तब महसूस हुआ था जब मुझे भी गोली मारी गई थी।

कहर ने 2008, 2009, 2012, 2014, 2020 और 2021 में गाजा पर इजरायल द्वारा किए गए हर हमले को झेला , जिसमें मेरे परिवार, दोस्तों, पड़ोसियों और साथी फिलिस्तीनियों की हत्या, अपंगता और तबाही हुई।

आज, जब मैं अपनी मातृभूमि में जो कुछ भी तबाही हो रही है, उसे देख रहा हूं, तो मुझे घबराहट महसूस हो रही है, लेकिन साथ ही गहरा आक्रोश और निराशा भी हो रही है। प्रिय यूरोपवासियों, जो कुछ चल रहा है उस पर आपके नेताओं की प्रतिक्रियाओं ने एक बार फिर नैतिक विफलता और एक गहरे दोहरे मानदंड को उजागर किया है।

11 अक्टूबर को, जब गाजा पर इजरायली अंधाधुंध बमबारी में 1,000 से अधिक फिलिस्तीनी पहले ही मारे जा चुके थे, यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने इजरायल को बिना शर्त समर्थन की पेशकश की। "यूरोप इज़राइल के साथ खड़ा है। और हम इजरायल के अपनी रक्षा करने के अधिकार का पूरी तरह से समर्थन करते हैं," उन्होंने कहा, उन्होंने गाजा पर इजरायल द्वारा लगाई गई पूरी नाकाबंदी, बिजली, पानी और भोजन और दवा की आपूर्ति में कटौती का कोई जिक्र नहीं किया - जिसे कानूनी विशेषज्ञ युद्ध अपराध की श्रेणी में रखते हैं।

निस्संदेह, इज़रायली अधिकारियों द्वारा फ़िलिस्तीनियों को "जानवर" और "अमानवीय" कहे जाने और ऐसी भाषा और नरसंहार संबंधी निहितार्थों पर कोई आधिकारिक यूरोपीय प्रतिक्रिया नहीं हुई । यह आश्चर्य की बात नहीं है, यह देखते हुए कि इजरायली निवासियों के द्वारा जिसमें वे "अरबों को मार डालो" चिल्लाते हैं, की भी कभी निंदा नहीं की गई।

लेकिन प्रवासी फिलिस्तीनियों और उनके यूरोपीय सहयोगियों को गाजा के लोगों के साथ शोक मनाने और एकजुटता प्रदर्शित करने से रोकने और सेंसर करने के लिए एक ठोस प्रयास किया गया । क्योंकि विभिन्न यूरोपीय राज्यों ने विरोध प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया है और पुलिस बलों ने प्रदर्शनकारियों को परेशान किया है और पीटा है।

विभिन्न राजनीतिक दलों के यूरोपीय राजनेता - जिनमें कई उदारवादी और ग्रीन लोग भी शामिल हैं - फ़िलिस्तीनियों के सामूहिक अमानवीयकरण के अभियान में शामिल हो गए हैं। फिर भी, ये वही व्यक्ति रूसी कब्जे के खिलाफ यूक्रेन के संघर्ष में उसके समर्थन में आगे आ रहे हैं।

उनके अनुसार, यूक्रेनियाई लोगों को विरोध करने का अधिकार है, फ़िलिस्तीनियों को नहीं; यूक्रेनियन "स्वतंत्रता सेनानी" हैं, फिलिस्तीनी "आतंकवादी" हैं। नागरिक घरों और बुनियादी ढांचे पर अंधाधुंध बमबारी में खोई यूक्रेनी जिंदगियां शोक के लायक हैं, समान परिस्थितियों में खोई गई फिलीस्तीनी जिंदगियों को बेहतर तरीके से नजरअंदाज किया जाता है - या इससे भी बदतर उचित ठहराया जाता है क्योंकि इज़राइल अपने "खुद की रक्षा करने के अधिकार" का प्रयोग कर रहा है। यह यूरोपीय दोहरा मापदंड सचमुच घातक है।

यूरोपियन हम फिलिस्तीनियों को, "क्रूर आतंकवादी" करार दे रहे हैं, यह बदतर है, विशेष रूप से जो कुछ चल रहा है उसके पूर्व-इतिहास को देखते हुए।

ब्रिटिश विदेश सचिव आर्थर बालफोर ने 1917 में एक प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर किए थे कि ब्रिटिश सरकार फिलिस्तीन में यहूदी लोगों के लिए स्वदेशी फिलिस्तीनी आबादी की भूमि पर एक राष्ट्रीय घर की स्थापना का समर्थन करेगी। होलोकॉस्ट, यूरोपीय जानलेवा यहूदी-विरोध का चरम था, जिसके बाद यूरोपीय देशों ने संयुक्त राष्ट्र के मतदान में सर्वसम्मति से इज़राइल के निर्माण का समर्थन किया। दुनिया का आधे से अधिक हिस्सा - जो अभी भी औपनिवेशिक शासन के अधीन है - मतदान नहीं कर सकता था।

बेशक, मूल फिलिस्तीनी आबादी से यह नहीं पूछा गया कि क्या वह यूरोपीय यहूदी-विरोधी क्रूरता की कीमत चुकाना चाहती है। उसके बाद इज़रायली मिलिशिया ने जातीय आधार पर 750,000 से अधिक फिलिस्तीनियों को उनकी मातृभूमि से सफाया कर दिया, जिसे हम नकबा, तबाही कहते हैं।

जैसा कि अमेरिकी लेखक जेम्स बाल्डविन ने इस वास्तविकता को प्रतिबिंबित करते हुए 1979 के एक लेख में सटीक रूप से कहा था "इजरायल राज्य यहूदियों के उद्धार के लिए नहीं बनाया गया था; इसे पश्चिमी हितों के उद्धार के लिए बनाया गया था... फ़िलिस्तीनी तीस वर्षों से अधिक समय से "फूट डालो और राज करो" की ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति और यूरोप के दोषी ईसाई विवेक के लिए सजा भुगत रहे हैं।

प्रिय यूरोपवासियों, इस "दोषी ईसाई विवेक" को अब 75 वर्ष हो गए हैं। किसी को आश्चर्य होगा कि हम फ़िलिस्तीनियों के साथ जो कुछ हो रहा है, उसमें अपनी संलिप्तता के लिए क्या आपको कभी अपराधबोध महसूस हुआ ?

फिलिस्तीनियों ने जिस क्रूरता का सामना किया गया है, उस पर आलोचनात्मक दृष्टि डालना और स्वयं से पूछना इतना कठिन नहीं होना चाहिए कि क्या यह सही है? इतिहास की किताब खोलना और फिलिस्तीन में जो कुछ हुआ है उसके बारे में पढ़ना और जानना और आत्मनिर्णय और वापसी के लिए हमारे संघर्ष को समझना इतना मुश्किल नहीं होना चाहिए। हमारे अधिकारों की पुष्टि करने वाले संयुक्त राष्ट्र के असंख्य प्रस्तावों को पढ़ना इतना मुश्किल नहीं होना चाहिए - विरोध करने के लिए, कब्जे से मुक्त होने के लिए, अपनी मातृभूमि में लौटने के लिए।

मानवाधिकारों, समानता और लोकतंत्र के बारे में बात करना और फिर उपनिवेशीकरण और रंगभेद में लिप्त देश की क्रूर नीतियों पर सवाल उठाना अपराध है?

युद्ध के पहले छह दिनों में, इज़राइल ने घनी आबादी वाले गाजा पट्टी पर 6,000 बम गिराए। विशेषज्ञों के अनुसार, यह एक परमाणु बम के एक चौथाई के बराबर है। फ़िलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, 1,000 से अधिक बच्चों सहित 3,000 से अधिक लोग मारे गए; लेकिन हम वास्तव में वास्तविक मौत के बारे में नहीं जानते क्योंकि कई लोग मलबे के नीचे दबे हुए हैं और उन्हें बाहर निकालने वाला कोई नहीं है।

पिछले हफ्ते इजराइल ने लगातार बमबारी के तहत गाजा में 11 लाख से ज्यादा फिलिस्तीनियों को अपने घर खाली करने का आदेश दिया था. फिलिस्तीनियों के अपने घर छोड़ने और मलबे के बीच से भ्रामक सुरक्षा की ओर बढ़ने की छवियों ने हमें नकबा की याद दिला दी है। उनमें मेरा परिवार भी शामिल है, जिसने भारी मन से हमारे आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त घर को छोड़ दिया, जिसे बनाने में उन्होंने अपना पूरा जीवन लगा दिया।

जैसे ही मैं ये पंक्तियाँ लिखता हूँ, मुझे किसी भी क्षण अपने परिवार की मृत्यु के बारे में संदेश मिलने का डर रहता है- इस्माइल मेरे पिता, हलीमा मेरी माँ, मोहम्मद मेरा भाई, अस्मा मेरी भाभी, और मेरी सबसे खूबसूरत भतीजी इलिया (6 वर्ष) और नाया (2 महीने)।

मैं चाहता हूं कि आप उनके नाम याद रखें. अगर वे मारे गए तो मैं उन्हें महज़ संख्या नहीं बनने दूँगा।

प्रिय यूरोपवासियों, मैं आज उनके जीवन के लिए नहीं डर रहा होता, अगर यह इजरायली अपराधों में आपका समर्थन, चुप्पी और जटिलता और आपके द्वारा चुनी गई यूरोपीय सरकारों से इजरायल को प्राप्त आर्थिक और राजनीतिक समर्थन नहीं होता।

एक दिन आएगा जब फिलिस्तीन आज़ाद हो जाएगा। यह हिसाब-किताब का दिन होगा. आपसे पूछा जाएगा, जब इज़रायली कब्ज़ा और रंगभेद फ़िलिस्तीनियों को कुचल रहा था, तब आप क्या कर रहे थे? तब आप अपनी निष्क्रियता के लिए क्या कहेंगे?

आपके पास अब भी समय है कि आप खुद को इतिहास के गलत पक्ष में होने की शर्मिंदगी से बचा लें। जैसा कि बेल हुक्स ने कहा, "एकजुटता एक क्रिया है"। क्या आप अब गाजा में नरसंहार को रोकने के लिए कार्रवाई कर रहे हैं?